International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 6, Issue 01, January 2019
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# भारतीय संगीत के विकास में संवाद तत्व
# (स्वर, ग्राम, श्रुति, थाट, राग, वादी, संवादी आदि)

**Dr. Vivek Ranga**
**Associate Professor of (Music Vocal)**
**Govt. College for Women, Karnal**

**Abstract**

भारतीय संगीत के विकास मानव जाती के विकास के साथ ही जुड़ा हुआ है | इसीलिए संगीत का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है | मानव सभ्यता के विकास के साथ- साथ ही संगीत का विकास भी होता चला गया | प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक संगीत के विकास में मधुरता तथा भाव पक्ष का अत्यधिक महत्त्व रहा है | मधुरता संगीत का स्वभाविक गुण है, और यह मधुरता संगीत में स्वर- संवाद के कारण उत्पन्न होती है |स्वर- संवाद का सम्बन्ध मनुष्य की कलात्मक एवं ज्ञानात्मक प्रवृति से है | मनुष्य की प्रत्येक ज्ञानेद्रिय सुख चाहती हैं | आँखे सुंदर- सुंदर वस्तुओं को देखना चाहती हैं | विशव में व्याप्त सभी संगीत का आधार स्वर- संवाद ही हैं | उत्तर भारतीय संगीत में दो संवाद प्रमुख माने गए हैं | सडज- पंचम और सडज- मध्यम संवाद | इनके अलावा और भी संवाद हो सकते हैं, जिनकी मान्यता शास्त्र में नहीं है | वयवहार में अवशय हैं | पाशचात्य संगीत में सा – गा संवाद को भी मान्यता मिली हैं |

दो स्वरों की संगति को संवाद कहते हैं जन दो स्वरों की संगति कानों को प्रिय लगती है, उसके भाव को शुभ स्वर- संवाद और जिन दो स्वरों से अप्रिय भाव उत्पन्न होता है, उसे विवाद कहते हैं | यहाँ पर स्वर – संवाद से हमारा तात्पर्य शुभ स्वर – संवाद से है | संवाद अथवा विवाद केवल दो स्वरों के साथ-साथ उच्चारण में ही नहीं उतपन्न होता बल्कि एक के बाद एक तुरंत दुसरे स्वर के उच्चारण में भी उतपन्न होता है | जो कानों को अनुभव होता है | भारतीय संगीत का विकास जिन चरणों से होकर गुजरा हैं उनमे प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक श्रुति, स्वर, ग्राम, थाट, राग, वादी, संवादी आदि संवाद तत्वों का अत्यधिक महत्व रहा हैं |

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

## भारतीय संगीत के विकास में महत्वपूर्ण संवाद तत्वों का वर्णन:-

## स्वर:-

स्वर संगीत की आत्मा हैं | स्वर ही राग का जनक हैं, और आत्मा की अभिव्यक्ति का साधन हैं | स्वर की उत्पत्ति श्रुतियो से ही मानी जाती हैं | जो स्वयं प्रकाशित हो वह स्वर है, स्वर वह नाद हैं जो रंजक हो और जिसका अन्य नादों के मध्य विशिष्ट स्थान हो | केवल नाद के रंजक होने से वह नाद स्वर नहीं बन सकता | स्वर कहलाने के लिए उसका श्रुतियों के सम्बन्ध होना अनिवार्य हैं | हमारे संगीत विव्दानों ने 22 श्रुतियो में से 12 स्वरों को संगीत कार्य के लिए उपयुक्त मन हैं | 12 स्वरों में से शुद्ध स्वर केवल सात हैं, और विकृत स्वर पांच निर्धारित किये गए हैं | जो स्वर अपने निशिचत स्थान से हट जाते हैं वह विकृत स्वर कहलाते हैं | जब हम एक स्वर से दुसरे स्वर पर जाते हैं तो एक मधुर भाव उत्पन्न होता हैं वह मधुर भाव ही संवाद कहलाता है | सा-मा तथा सा-पा स्वरों में जो श्रुति अंतराल है, उन श्रुति अंतरालो में जितने भी स्वर आते हैं वे सभी स्वर – संवाद के अंतर्गत ही माने गए हैं |

## ग्राम:-

ग्राम एक समूहवाचक शब्द हैं सात स्वरों की मुलभूत वयवस्था को ग्राम कहा जाता हैं | साधारण भाषा में ग्राम शब्द का अर्थ है "गांव " जिस प्रकार कई व्यक्तियों से मिलकर परिवार तथा कई परिवारों से मिलाकर गांव बनता हैं, उसी प्रकार संगीत शेत्र में स्वरों के समूह से ग्राम बनता हैं | ग्राम तीन प्रकार के माने गए हैं - **1) षडंज ग्राम 2) मधयग्राम 3) गंधार ग्राम** |

1) **षडंज ग्राम –**
   इस ग्राम में सा स्वर प्रधान माना जाता हैं | और इस ग्राम का प्रारंभ भी सा स्वर से भी होता हैं | षडंज ग्राम में सात स्वर सा रे गा मा पा धा नि क्रमशः 4-3-2 षडंज ग्राम में -4-4-3-2 की श्रुति अंतरों पर स्थापित होता है | इस ग्राम में यदि कोई स्वर अपनी श्रुति बदल लेता है तो वह षडंज ग्राम में नहीं रहता |
2) **मधयग्राम:-**
   षडंज ग्राम की भांति मध्यग्राम में मा स्वर ही प्रमुख माना गया हैं |मध्यग्राम के सात स्वर सा रे गा मा पा धा नि क्रमशः 4-3-2-4-3-4-2 श्रुति अंतराल पर स्थापित रहते हैं | इस श्रुति स्वर स्थापना के अनुसार मध्यग्राम का पंचम एक श्रुति नीचे हो जाता है | अर्थात 16 वीं श्रुति पर स्थापित होता हैं | इस आधार पर

षडंज ग्राम और मध्यग्राम में मुख्य यही अंतर माना गया हैं | षडंज ग्राम का पंचम स्वर चतुश्रुतिक है, तथा मध्यम ग्राम में पंचम त्रुश्रुतिक माना गया हैं |

3) **गंधार ग्राम:-**

संगीत विव्दानो ने गंधार ग्राम को स्वर्ग लोक में बताया है | इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि गंधार ग्राम लुप्त हो चुका है | अत: ग्राम स्वरों का समूह है, इसी कारण इसमें संवाद तत्व विधमान हैं |

## श्रुति-

वह सूक्ष्म में सूक्ष्म ध्वनि जो एक दुसरे से भिन्न स्पष्ट सुनाई दे श्रुति कहलाती है | श्रुति शब्द की उत्पत्ति "श्रु" धातु से मानी है | श्रु का अर्थ सुनना अर्थात जो सुनाई दे वह श्रुति है | शास्त्रकारों के अनुसार श्रुति की परिभाषा इस प्रकार है- " श्रूयते इति श्रुति: " अर्थात जो आवाज सुनाई दे वह श्रुति है | परंतु कानों को सुनाई देने वाली हर आवाज श्रुति नहीं हो सकती इसलिए श्रुति इस प्रकार भी परिभाषित किया जा सकता है, कि संगीत प्रयोगी ध्वनि अथवा नाद जो कानों को स्पष्ट रूप से सुनाई दे सके श्रुति कहलाती है | श्रुति को परिभाषित करते हुए यह भी कहा जा सकता है कि जो ध्वनि स्पष्ट सुनी जा सके समझी जा सके और किन्ही दो ध्वनियों के बीच का अंतर बता सके वह श्रुति कहलाती है | संगीत विव्दानों ने श्रुतियों कि संख्या 22 मानी है, और इन 22 श्रुतियों में से 12 श्रुतिया चुनकर उन पर 12 स्वरों कि स्थापना की गई है | इस प्रकार 12 स्वरों के मध्य जो श्रुति अंतराल है वहां पर भी संवाद विधमान रहता हैं |

## थाट-

थाट का अर्थ है जन्मदाता अर्थात जन्म देने वाला | हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में कुल 10 थाट माने गए हैं | इन 10 थाटो के अंतर्गत ही हमारे सभी राग आते हैं | लेकिन थांट में राग कि तरह आरोह तथा अवरोह दोनों का होना आवश्यक नहीं हैं | थांट में केवल सात स्वरों का आरोह होता है | थाट में रंजकता का होना भी आवश्यक नहीं है क्योंकि थाट गए बजाये नहीं जाते |

## राग-

राग का अर्थ है रंजन करने वाला | राग कि उत्पत्ति "रंज " धातु से हुई है | जिसका अर्थ है मन को रंजकता से भरने वाला | राग में आरोह तथा अवरोह दोनों का होना आवश्यक है | राग में कम से कम 5 तथा अधिक से अधिक 7 स्वर हो सकते है | राग में रंजकता का होना अति आवश्यक है,क्योंकि राग गाये बजाये जाते हैं | राग में लगने वाले स्वरों से जो मधुरता का भाव उत्पन्न होता है वहीं संवाद है | हर राग का अपना एक अलग एक अलग स्वरूप होता है, जिससे उस राग कि पहचान होती है |

## वादी- संवादी

राग में लगने वाला मुख्य स्तर जिससे राग कि पहचान होती है , वह "वादी" स्वर कहलाता है | वादी स्वर पर बार-बार ठहराव किया जाता है | वादी स्वर को राजा स्वर भी कहते है | वादी स्वर के बाद जिस स्वर पर ठहराव किया जाता है, वह "संवादी" स्वर कहलाता है | संवादी स्वर को मंत्री भी कहा जाता है |

## निष्कर्ष-

निष्कर्ष तोर पर हम कह सकते है, कि स्वर, ग्राम, श्रुति, थाट, राग तथा वादी- संवादी इत्यादि का भारतीय संगीत को विकास में महत्वपूर्ण  स्थान रहा है | इन सभी संवाद तत्वों से मिलकर ही भारतीय संगीत सम्पूर्ण होता है | सबसे पहले नाद अथवा ध्वनि कि उत्पत्ति मानी जाती है, तथा संगीत में नाद को व्यवस्थित रूप देकर 22 श्रुतियों में विभाजित किया गया तथा उन 22 श्रुतियों पर 12 स्वरों कि स्थापना की गई | इसी प्रकार राग, थाट, ग्राम, इत्यादि के परस्पर संवाद से ही भारतीय संगीत विकास के हर पड़ाव को पार कर पाया है |

## संदर्भ सूची-


1) https://andjournalin.files.wordpress.com,2018] Rearch paper] संगीत का उदभव व विकास, डॉ हेमा दानी,
2) हरीश चन्द्र श्रीवास्तव, राग परिचय भाग-4, संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलाहबाद पृष्ठ संख्या-208
3) डॉक्टर मीरा, संगीत शिक्षण भाग-1, ई बी डी पब्लिकेशन, महावीर कम्प्लेक्स रेलवे रोड करनाल, पृष्ठ संख्या -4-5
4) डॉक्टर क्यूटी, संगीत सारस्वत, आरती पब्लिकेशन देवी मंदिर कंडी मर्केट जींद, पृष्ठ संख्या -15
5) डॉ. अशोक कुमार यमन, संगीत स्तनावली, अभिषेक पब्लिकेशन चंडीगढ़, पृष्ठ संख्या -149-151
6) हरीश चन्द्र श्रीवास्तव, राग परिचय भाग -3  संगीत सदन प्रकाशन साउथ मलाका इलाहबाद, पृष्ठ संख्या -136-137